वर्ष-3, अंक-9, फरवरी-अप्रैल, 2015

सदानीरा

विश्व कविता की पत्रिका

सम्पादक

आग्नेय

सदानीरा

विश्व कविता की पत्रिका

सदानीरा का ई-संस्करण **sadaneera.com** पर उपलब्ध.

एक वर्ष में चार बार प्रकाशित
यह अंक : **फरवरी-अप्रैल, 2015**
मूल्य- 100 रुपये, वार्षिक 400 रुपये
संस्थाओं के लिए : वार्षिक 500 रुपये
विदेश के लिए : मूल्य 25 डालर

वार्षिक शुल्क **सदानीरा** के नाम पर
भोपाल में देय चेक या डिमाण्ड ड्राफ्ट या
मनीऑर्डर या नेट बैंकिंग से भेजें.

Current A/c : Sadaneera-118411023949
IFSC : BKDN0811184

अंक रजिस्टर्ड डाक से.

सम्पादकीय सम्पर्क :

बी-207, चिनार वुडलैण्ड,
कोलार रोड, भोपाल-462016 (म.प्र.)
फ़ोन : 0755-2424126,
मो.- 093031-39295, 094244-10139
ई-मेल- **agneya@hotmail.com**

प्रकाशक :

महेन्द्र गगन
25-ए, प्रेस कॉम्पलेक्स,
महाराणा प्रताप नगर, भोपाल (म.प्र.)
फ़ोन- 0755-2555789
मो.- 094250-11789
ई-मेल- **pahalepahal@gmail.com**

अनुक्रम

सम्पादक की ओर से 05

कवि-स्मृति : नन्द चतुर्वेदी

कविताएँ 09

डायरी 25

लोकतंत्र में प्रतिरोध, प्रतिपक्ष और असहमति का कवि/ **जीवन सिंह** 41

नन्द चतुर्वेदी का गद्य/ **हेमन्त शेष** 55

अमेरिकी कविता

वाल्ट व्हिटमैन 62

सेरा टीसडेल 67

अनुवाद : **लाल्टू**

विमल कुमार की कविताएँ 86

अंग्रेज़ी कविता

कमलादास 109

अनुवाद : **संतोष अलेक्स**

कविता-निबन्ध

मीरा : प्रेम-लता का आनन्दफल/ **ध्रुव शुक्ल** 119

बसन्त जैतली की कविताएँ 123

एकाग्र : विष्णु नागर

कविताएँ 147

डायरी 158

व्यंग्य 162

साक्षात्कार 166

मोनिका कुमार की कविताएँ

अर्थ-व्याप्ति के प्रति आसक्ति/ **अविनाश मिश्र** 172

कृति-केन्द्रित

विजय कुमार की कृति : खिड़की के पास खड़ा कवि

बाहर भीतर देखती नज़र/ **प्रेम रंजन अनिमेष** 182

कविताएँ

बजरंग बिश्नोई 191

रश्मि भारद्वाज 202

अवदान 218

सदानीरा : यहाँ से लें 220

रचने की वर्णमाला

साहित्य के संसार में कोई क्यों दाखिला लेता है? कम से कम वह उस संसार में इसलिए नहीं होता है कि वह अपनी रचना के लिए समाज में थोड़ी-सी जगह चाहता है या साहित्य के बरास्ते अपने लिए मकान बनाना चाहता है जो वह अभी तक नहीं बना सका है। सम्मानित या अलंकृत होने के लिए तो वह बिल्कुल ही नहीं रचता है। जैसा कि पास्तरनाक ने कहा है- 'कवि के लिए कुर्सी हमेशा ख़ाली रहती है।'

क्या आज का रचनाकार यह आत्म-स्वीकारोक्ति कर सकता है कि एक रचनाकार के रूप में वह बेहद आत्म-केन्द्रित, अपने ही केंचुल और अपने ही खोल में रहने वाला जीव है? वह रेशम का कीड़ा भी नहीं बन सका है जो कम से कम अपने लिए अपने में से ही रेशम बुन लेता है। एक रचनाकार के रूप में देश के महान जीवन की, हमारे लोक-समाज की कोई समझ उसमें नहीं है। अब तक उसके प्रति उसकी कोई संवेदनशीलता भी नहीं है, प्रतिबद्धता का तो प्रश्न ही नहीं है। निरक्षर के सामने जिस तरह कोरी स्लेट होती है, उसके रचना-कर्म की स्लेट भी पूरी तरह कोरी है जिसमें सच्चाई की वर्णमाला के किसी अक्षर का तो प्रश्न ही नहीं है।